

SHAW-WAT YHET

///

SHAW-WAT YHET

१७ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥ नमः श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
गङ्गाधराय नमः ॥ यद्विष्णुं कथयामास सायः ॥ दत्तात्रेयानि सुदना ॥
॥ सखा प्रनतदवाययास्तुवाय नमोस्तु ॥ नित्यं कश्चिदपि सखायवानि
अकथयिष्यामि ॥ २ ॥ उषधिं याननायाय हितं वापय नमः ॥ ब्रह्म
द्रविष्ठाव्याः ॥ यिमागिदवाय नमः ॥ ३ ॥ हकिमगुकि यदाय विन
रुद्रय नमः ॥ ननकालसत्रयाय धृष्टस्यसुनी ॥ ४ ॥

विशिष्टप्रतितापारयध्विधिरयिष्यायवसि वस्यगदमस्त्राय रुनवा
यमदान्मनं ॥ ५ ॥ यामस्ययुयसिद्यायदय्याधिनविनामिनं वका
सुनविधातायग्राहनायिथ्याकाप्रिनं ॥ ६ ॥ हृदादनायकाभाय
महामांसयिष्यायवानुमागदीर्तनितायमधुयानायिष्यायव ॥
७ ॥ तनकयिष्यदवायरुकानायिष्यतामिन्नकाप्रिनं रुनवायमः

[illegible]

मंथयायकः रिमयाजं नमामिह ॥ ६ ॥ यका शु वज यासंघि क्रि
 सयन कनीध सासनं वद नं र वद थ धन सदिताः सव सुनिः
 किं व क या म सु या गिंद विनु नयि सार का सन कं उ दु द हिय व
 सुस मय न न य सिद्धि क लदा ना गि र व न मादि नः ज ग न द व ज ग
 न मा मि र्द ना गि र द ना गि र वि ॥ गि र य मा रि र्द न दार वा नि ग ल
 य ति स दि द ही ग र्या रि म या जं न मा मि ह ॥ म क सि र य र्द न या धि

प्रिगुवः सवयतिधममाऊइधिसिलः वजवास् वकडगाव्या
लिहाननरुलिषकधमिसददवहुनयाहिनकननजाकदियव
यहत्वंसवनविस्वनाथंजधायजवतामकःमहाप्रयरायानकः
वगुइगधयंखरिदिगयाप्रहयवत्वरिममूडःत्वग्रुवना
मथ्यरिममऊनमामिदातात्वंसातिद्वयदविडीकटिचय
निःनानावतमानेमालाधामिंदानरिहताहुधिप्रवजधका

पहविताययिगुवन्यधमिमहाप्रयमहामायीजागमायाःक
मालिनिःउमातिवन्दनमीषिषिकाशुक्कायिकावजहयव
रम्भमिषवक्रयानिययंइमीःवगुइगदमदिगतद्वयानिय
उदयमहादविजयामिधिंक्रमानवा॥१०॥उनमशीःतेमतेन
यारिममनामहामनामवकामरुयुदासर्वसर्वकरिःसर्वदवन
मरुतंययनानःशानिसव्यारावना॥सर्वसावकर्तसर्वय

निर्गमसो नरह ना कथितो वक्र एव ता न क कय का न क मारि
ह कय क पा न का न कः विविध सित विस्वा मा व्य दी वंद विविध म
नं माल ता न क द व रि मि हा गु ड ना म क ॥ ११ ॥ विस्वा य म दि ता व
मोक्ष क स य व र स्य द स मा लि धा न क द व द क म्भू वि ना म कः धर्म
धर्म प्र न व ता वि ध र मि वि न ह ॥ १२ ॥ प्री थ कालि क या रि त म म
म न वा सिः मां सा सि य गि नि ग म स वि तः वि नु श द र थ स त्व रि य

मि ता व म य द का म हा का म द क्क मा र्क रु कि म्भू कि र्क य दः ज न व रि
म स न क गु व क र का न द स व का म र्क न य न्य स व ग वि ज या व दः वि
स य म्भू ज य थ न र्क व ट मा र्क य ता न व ग ल म्भू म स र्क ग सि व न द
म द न ॥ १३ ॥ रि य्म रि ति र्क य न द्वि गु ज ग वा व ल स मी व म्भू म न
द न र व र्क न क म वा र म ॥ शु वा न र्क म न्य ग र्क शु र म र्क म व द य द
॥ १४ ॥ न म रि म स मा र्क म य र्क र्क र्क रि ता स य क टि त द स न रि

मव का गठ कौनि मी सदी धन नृः ति कटि कटि लं मी स द ह स नृ
 दनि सि स धा घ घ ठु रु सि रु नि रु नि रु जि मी ह ठ लं ॥ १५ ॥ हं हं हं
 का व द्वा दं स क न रु य ह लं सि ह रु य न मा मि ॥ धा व धा व ता ह सा र्ध नि
 धूत ध लं धा व द्वा क न रं ग्रा जा ठि व न नृ न व रु धि व द्वा पू रु या त
 द धा न र्ति मा ग म न रु म मी क स क न रु य ह न स र्व मा यं रु का वि रु रु रु मिः
 स न रु मि रु मि स न रु मि रु व न मी मि र्ति व्वा धु रु य न मा मि ॥

५

उं नमः श्रुति म न्ना जा यी ॥ न मा रु ग व न्ति आ र्थि ति मा रु दाय म न्ना रु
 का य न न मा ॥ मा ग्जी वि धु द न्ना यः या लु वा नां सि न्ना म नि को व वः
 मा न स द्वा र्जः व रु द द्वा य मि यी या ॥ हि म वा गि मि न्ना अ न्दु म न्ना म लु र्जः
 के न्ना मी सि व न स स द व द व न मा मि ह ॥ जा गि सि धु र्ति व क द द्वा का
 टि स र्थि स म य रु र्ति मा न न म द्वा त क व रु द मा न वा रि ता ग ग ध
 न स द्वा वि य न्ना म मा व रु व न न न्ना न्य ग द ह्ना म् वा द्वा वि

अथ समग्रं ॥ १३ ॥ जयस्व वासिनंद वयद कानां विषयत मुकुटि
 उत्पत्तिं तं वा त्वनामि भवपुयिनि ॥ १४ ॥ एकवीरुमहादेव किं
 र्ककमालनः विनाटनगालेयुष्ठनमामि सर्वहृदः जयामपुयिन
 दकं हिमसंनमहात्मनजयथनिनवारुगुः नयांरुद्रविष्वाति
 ॥ १५ ॥ नमो हिंदवायदुर्कै र्ककमाविनायुयमज्जानतः पुत्राणि
 कास्यामियममम ॥ १६ ॥ ॐ नमो श्रीरिमस्य नायनमानम ॥

८

गगनस्य यगनम ॥ सत्यशिवयुद्धिहिना ॥ १७ ॥ निज्जननमासि दः
 सर्वज्ञादिधनजयां ॥ रिमसंनममा नासुसंनयागुरुयययि ॥ यथयथ
 कुडुपकुडुपनययमासमनजात्रासाक्षादवमृज्जुलखयारिचन
 महावाहवमृद्धियवाकम ॥ १८ ॥ सर्वहृदसर्वकलसर्वदेवनसुनं
 ॐ नमो भूगारिमसंनार्यसर्वकामरुलयद ॥ १९ ॥ नमः श्रीयसुयासुयसु
 हरिमसंनार्यनमानम ॥ २० ॥ यथां ॥ सुवर्धुसिंहासनमथहिर्गयक

वष्टुत्रकमूरवदिरजयकयतुयगिनगुं॥४॥दहिनगुर्गुं॥५॥जसकसः
 हावलंमकुसंघादवाभनुजाजरयमुद्राधलयथागिरयदीभुगं॥
 माग्मनादवरुगशीस्त्रिमसनजगातयाजंनमाभिदी॥६॥मरु
 छुचलमिरुक्कवालीविजशीरिमसनरुयसकनरुमायादुत्पन्न
 माभि॥निरुयामिउद्रागिगविकासाभियममेश्वरहमरुवळुगयवि
 शशिहमयारनः॥जग्निमयसमाहर्कसर्वयकनसङ्कसकलजग

तस्मात्प्रयत्नयसादा ॥५०॥ जगत्तमनो वां कुमिधिरुपसादलयप्रभ
 चययिनिपुण्यध्वयदीयगन्धमध्वमाससहितनयरुक्ममहाप्रोय ॥
 सत्यवीनइधिहिमरिमसनमसावप्रवृद्धिप्रराक्रममहाज्ञान ॥
 इनंसर्वसाक्षिधनइहयनकुप्रवृद्धिकामरुनायदा ॥ सददवजगत्तक
 मसिद्धिनेनानियरुइयाकुवमसत्यससत्यमाहावलमसाज्ञान ॥
 द्विकामरुजगत्तनसिद्धिप्रानियरुइयाकुवमिद्रुवन्पयफ ॥

श्रीगणेशाय नमः ॥ विश्वरूपं यद्वन्द्यं गन्तव्यं नमः ॥ श्रीवज्रमहाकायाय नमः ॥
 विसृज्य कुरुदन्तं वज्रमहाकायं नाम ॥ हिमसैन्यं गगनयात्रं नमामि ॥
 तपोधनं कुरुवन्तं मयि सति द्रव्यं विष्णुं हृदयाद्व्यतिरिक्ताः ताल
 मनाध्वनीजनं यत्कन्यासमलं नृपय नृपय पापनाशकं ॥ ॥ ॥
 ॐ वज्रं यमारुह्य पुरुषं गगनं कुरु माता द्रव्यं विदवीतीत्युच्यते ॥

८

ननिमानावनामि ॥ ॐ दमयान्तरं गगनं नरकोटिस्त्वं महा
 सत्वसावः सर्ववर्तिय सवसुदवमानुषासुललाकोर
 गवतां लवितामस्य नन्दमिति ॥ ॐ ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
 हिमस्य ननाम धालनिहमा ॥ ० ॥

3

ASIA JCHINA

111

1011. 211. 111. 111.